*नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त*

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा**

**Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha**

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

*(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)*

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

## पालि भाषा एवं साहित्य पर कार्यशाला उदघाटित

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संस्कृति विद्यापीठ में संचालित डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केंन्द्र की ओर से आयोजित 'पालि भाषा एवं साहित्य' विषय पर कार्यशाला का उदघाटन सोमवार को विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा की प्रमुख उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर स्वागत वक्तव्य संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. एल. कारूण्यकरा ने दिया। उदघाटन समारोह में मुख्य अतिथि भदंत विमलकीर्ति

गुणसिरी, पालि भूषण प्रो. बालचंद्र खांडेकर, डॉ. एम. एल. कासारे उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन केंद्र के प्रभारी अध्यक्ष डॉ. सुरजीत कुमार सिंह ने किया।

कार्यशाला में पालि भाषा एवं साहित्य अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के बौद्ध अध्ययन पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. भिक्षु सत्यपाल महाथेर ने कार्यशाला के

प्रथम सत्र को संबोधित किया। उन्होंने बौद्ध दर्शन के विषय कर्मविपाक पर अपनी बात रखी। कर्म के महत्व को समझाते हुये उन्होंने स्पष्ट किया कि व्यक्ति को अपने कर्म का विपाक अर्थात फल इसी जन्म में मिलता है। कार्यशाला के चतुर्थ दिन विश्वविद्यालय के छात्रों एवं शोधार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान प्रो. सत्यपाल महाथेर ने किया। इस सत्र में उन्होंने त्रिरत्न एवं त्रिशरण, पुनर्जन्म, आर्यसत्य एवं प्रतीत्यसमुत्पाद को स्पष्ट किया। संस्कृति विद्यापीठ के प्रवेश व्दार पर भगवान बुद्ध के जीवन से संबधित चित्रों का लोकार्पण पूज्य भन्ते प्रो. भिक्षु सत्यपाल एवं भन्ते संघरत्न मानके की ओर से किया गया। इस अवसर पर प्रो. अन्नपूर्णा सी., डॉ. प्रीति सागर, डॉ. अनवर अहमद सिद्दिकी, डॉ. सुनील कुमार, शुभांगी शंभरकर, विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

कार्यशाला का संचालन बौद्ध अध्ययन केन्द्र के प्रभारी निदेशक डॉ. सुरजीत कुमार सिंह ने किया। इस सत्र के प्रारंभ में भगवान बुद्ध की मूर्ति के समक्ष विद्वानव्दय पूज्य भन्ते प्रो. भिक्षु सत्यपाल एवं भन्ते संघरत्न मानके आदि ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। प्रथम सत्र में भन्ते संघरत्न मानके ने महायान परंपरा के देशों में पालि का प्रभाव विशेषकर जापान, कोरिया एवं चीन को लेकर विस्तार से प्रकाश डाला।